|  |
| --- |
| 28. Juli 2024 |
| **17. Sonntag im Jahreskreis B oder Hochfest des Heiligen Liborius (23. Juli)** |
| Erste Lesung: 2 Kön 4,42-44; Zweite Lesung: Eph 4,1-6; Evangelium: Joh 6,1-15 |
|  |  |  |
| Eröffnung: | GL 389, 1+2!+6 | Dass du mich einstimmen lässt |
|  | GL 477, 1+2 | Gott ruft sein Volk zusammen |
|  |  |  |
| Kyrie: | GL 155 | Kyrie eleison |
|  |  |  |
| Gloria: | GL 167 | Dir Gott im Himmel |
|  |  |  |
| Antwortgesang: | Ps 145,8-9.15-18 |
|  | Kehrverse: |  |
|  | GL 87 | Aller Augen warten auf dich |
|  | GL 401 | Lobet den Herrn |
|  | oder Lied: |  |
|  | GL 427, 1 | Herr, deine Güt ist unbegrenzt |
|  |  |  |
| Halleluja-Ruf: | Ruf: GL 174, 5 |  |
|  | Vers: |  |
|  | *Ein großer Prophet wurde unter uns erweckt:* |
|  | *Gott hat sein Volk heimgesucht.* |
|  |  |
| Credo: | GL 802 | Den Taufbund wir erneuern |
|  |  |  |
| Gabenbereitung: | GL 146, 1-4 | Du rufst uns, Herr |
|  | GL 184, 1-3 | Herr Wir bringen in Brot und Wein |
|  | GL 186, 1-3 | Was uns die Erde Gutes spendet |
|  | GL 484, 2-4 | Jedes Geschöpf |
|  |  |  |
| Sanctus: | GL 718 | Heilig |
|  |  |  |
| Agnus Dei: | GL 209 | Du teilst es aus |
|  |  |  |
| Danksagung:  | GL 211, 1-3 | Wir rühmen dich, König |
|  | GL 213, 1+4 | O heilge Seelenspeise |
|  | GL 215, 1 | Gott sei gelobet |
|  | GL 216, 1+2 | Im Frieden dein |
|  | GL 402, 1+3+11 | Danket Gott |
|  |  |  |
| Schluss: | GL 840, 1+3-5 | Sei gegrüßet, o Libori |